देख कर राम जी को जनक नंदिनी | By Sheetal Pandey

देख कर राम जी को जनक नंदिनी
बाग़ में बस खड़ी की खड़ी रह गई
राम देखे सिया को सिया राम को
चारों अँखियाँ लड़ी की लड़ी रह गई
देख कर राम जी को..................

सब सखी देख कर यूँ कहने लगी
रच दी है विधाता ने सुन्दर जोड़ी
पर धनुष कैसे तोड़ेंगे कोमल कुंवर
मन में शंका बनी की बनी रह गई
देख कर राम जी को..................

बोली दूजी सखी ये छोटे ही सही
पर चमत्कार इनका तू नहीं जानती
एक ही बाण में ताड़का थी गिरी
फिर उठी ना पड़ी की पड़ी रह गई
देख कर राम जी को..................

जब अयोध्या से जब जनकपुर गए
झट से सब सखियाँ थी लगी झाँकने
राम युगल रूप देख जनक नंदिनी
जहाँ खड़ी थी खड़ी की खड़ी रह गई
देख कर राम जी को..................

टूटते ही धनुष खलबली मच गई
झुंझलाने लगे सबका मुख देख कर
इस सभा में कोई धनुष हिला ना सका
सबकी अँखियाँ चढ़ी की चढ़ी रह गई
देख कर राम जी को..................

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%a6%e0%a5%87%e0%a4%96-%e0%a4%95%e0%a4%b0-%e0%a4%b0%e0%a4%be%e0%a4%ae-%e0%a4%9c%e0%a5%80-%e0%a4%95%e0%a5%8b-%e0%a4%9c%e0%a4%a8%e0%a4%95-%e0%a4%a8%e0%a4%82%e0%a4%a6%e0%a4%bf%e0%a4%a8%e0%a5%80-by/